मछली रानी बड़ी सयानी

बाल कहानी पुस्तिका

मछली रानी बड़ी सयानी

संध्या जोशी ✡ रूचि बड़ोला ✡ एस.ए. हुसैन

मछली रानी बड़ी सयानी

2024

गंगा की स्वच्छता के लिए गंगा नदी के बेसिन में जलीय जीवों के संरक्षण एंव पारिस्थितिकी सेवाओं के रखरखाव के लिए नियोजन एवं प्रबन्धन

परियोजना अन्वेषक
रुचि बडोला, सैयद एनुल हुसैन

जलीय जीव संरक्षण निगरानी केंद्र भारतीय वन्यजीव संस्थान देहरादून

यह पुस्तिका जलशक्ति मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के अंतर्गत परियोजना 'गंगा की स्वच्छता के लिए गंगा नदी के बेसिन में जलीय जीवों के संरक्षण एंव पारिस्थितिकी सेवाओं के रखरखाव के लिए नियोजन एवं प्रबन्धन' द्वारा निर्गत की गई है।

लेखन
संध्या जोशी
रुचि बडोला
एस.ए. हुसैन

प्रारूप
महेश पांडे, ख्याति चौहान

इलस्ट्रेशन
अमन उनियाल
ख्याति चौहान
Google

उद्धरण
डब्लू आइ आई गैकमैक (2023)। 'गंगा की स्वच्छता के लिए गंगा नदी के बेसिन में जलीय जीवों के संरक्षण एंव पारिस्थितिकी सेवाओं के रखरखाव के लिए नियोजन एवं प्रबन्धन'। गंगा जलीय जीव संरक्षण निगरानी केन्द्र भारतीय वन्यजीव संस्थान देहरादून भारत। पी.पी. 34

भारतीय वन्यजीव संस्थान
चन्द्रबनी देहरादून – 248001
उत्तराखंड, भारत

ISBN No. 978-81-978601-1-9
मूल्य: रू0 250.00

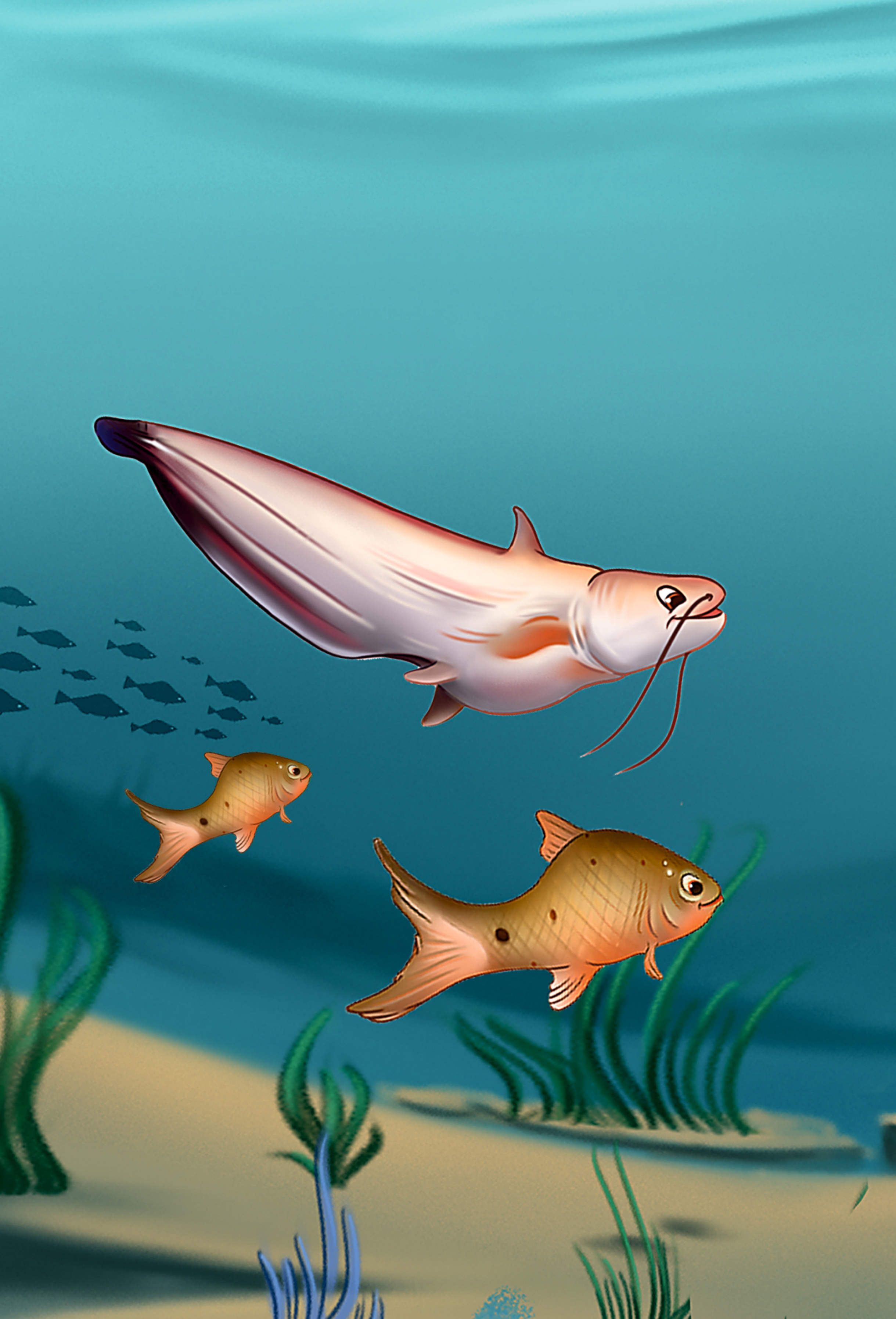

गंगा में जीवन

प्यारे बाल गंगा प्रहरी दोस्तों, आज हम आपको सुनाने जा रहे हैं, देवनदी गंगा की कहानी, जो बांची जायेगी गंगा में रहने वाले जीव जंतुओं की जुबानी। कहानी के प्रथम संस्करण में हम आपको सुनाने जा रहे हैं गंगा नदी में पाई जाने वाली मछलियों की कहानी। कहानी के पात्र इसमें रहने वाले जलीय जीव ही होंगे, जो कि आपको एक नदी के तंत्र से अवगत तो करवायेंगे ही, साथ ही वो पौराणिक कथाओं में वर्णित स्वयं की उत्पत्ति के सार को भी सुनाएंगे। इस कहानी के माध्यम से बच्चे जान पायेंगे कि एक नदी के पारिस्थितिकी तंत्र को बनाये रखने में जलीय जीवों की क्या भूमिका है, तथा वो नदी की जैवविविधता प्रबंधन में किस प्रकार सहयोग करते हैं। आप सब जान पायेंगे कि ये जीव नदी में रहने वाले अन्य जीवों एवं मनुष्य की भोजन श्रृंखला की, किस प्रकार एक

महत्वपूर्ण कड़ी है। कहानी में ये भी बताया जायेगा कि वर्तमान में आये पर्यावरणीय परिवर्तनों से वो कैसे प्रभावित हो रहे हैं, तथा बढ़ती आबादी व मानव जनित गतिविधियों से उनको क्या नुकसान पहुँच रहा है। नदी के बिगड़ते पर्यावरण के कारण जिस प्रकार प्रदूषण का स्तर बढ़ रहा है और नदियों का जल स्तर घट रहा है कभी आपने कल्पना की है, कि ये नदियाँ विलुप्त भी हो सकती हैं। अगर पृथ्वी से नदियाँ विलुप्त हो गईं तो क्या होगा? नदियाँ जो हमारे जीवन का एक अभिन्न हिस्सा हैं और जिनसे धरती पर जीवन का सार है, उनकी विलुप्ति से मानव तथा जलीय जीवों के अस्तित्व पर खतरा आ सकता है। बिना पानी के और बिना जीवन के, धरती केवल एक ग्रह मात्र रह जायेगी लेकिन उसकी जीवंतता समाप्त हो जायेगी। कल्पना कीजिये कि बिना जीवन के धरती कैसी दिखेगी। क्या आप जानते हैं, ये एक भयावह सच है, जिसके विषय में हमें अभी से विचार करना होगा और उन सभी कारणों, जिनकी वजह से नदी के पर्यावरण को नुकसान पहुँच रहा है, की तह तक जाना होगा। इस जटिल विषय के बारे में ही इस पुस्तक के पात्र, हमारे मित्र जलीय जीव हमें बतायेंगें। जी हाँ वो हमारे, पर्यावरण और प्रकृति के सच्चे मित्र ही हैं क्योंकि उनकी वजह से ही एक स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण होता है और जैवविविधता बची रहती है।

इस पुस्तिका का उद्देश्य कहानी के माध्यम से मनोरंजक तरीके से बच्चों को प्रकृति एवं पर्यावरण के प्रति जागरूक करना है। जिससे कि बच्चे अपने संसाधनों तथा जैवविविधता से अवगत हों तथा इनके संरक्षण के लिए सक्रिय रूप से भागीदारी निभाते हुए भविष्य के नींव निर्माण में अपनी भूमिका तय कर सकें।

संध्या जोशी
रुचि बडोला
एस.ए. हुसैन

मछली रानी बड़ी सयानी

बच्चों आज हम आप को सुनाने जा रहे हैं गंगा नदी में रहने वाली सोना मछली और उसके परिवार की कहानी, सोना मछली की ही जुबानी। सोना मछली है, अपने परिवार की सबसे सयानी और समय के साथ अनुभवी, उसने अपने सामने अपने परिवार की पाँच पीढ़ियों को देखा है। जिनमें उसकी दादी, उसकी माँ वो स्वयं उसकी बेटी मोना और उसकी नातिन टीना हैं। सोना ने वक्त के साथ बहुत कुछ बदलते देखा है। तो आओ, सुनते हैं सयानी सोना से मछलियों की कहानी .... ।

सोनाः— कितनी सदियाँ बीत गईं गंगा के साथ बहते...... रहते! कितने सुख—दुख बाँटे! बचपन की सहेलियाँ उनके परिवार बहुत याद आते हैं सब। अब तो सब बदल गया है। सारा वातावरण ....आबोहवा ..... कुछ भी तो पहले जैसा नहीं रहा। सुनों बच्चों मेरे नजदीक आओ...... कहाँ हो सब ? अब ज्यादा दूर मत जाना... किनारे पर जाल लगा है। तुम सब खेलने में इतने मशगूल हो जाते हो कि तुम्हें पता ही नहीं चल पाता कि तुम कितनी दूर निकल जाते हो। आओ! आज तुम्हें एक कहानी सुनाती हूँ। अब मैं बूढ़ी हो रही हूँ .... अगर मुझे कुछ हो गया तो मेरे अनुभव और जानकारियाँ मेरे साथ ही चली जायेंगी। आओ मेरे बच्चों मैं तुम्हें हमारे पुरखे पुरखिनों की उत्पत्ति की कहानी सुनाती हूँ।

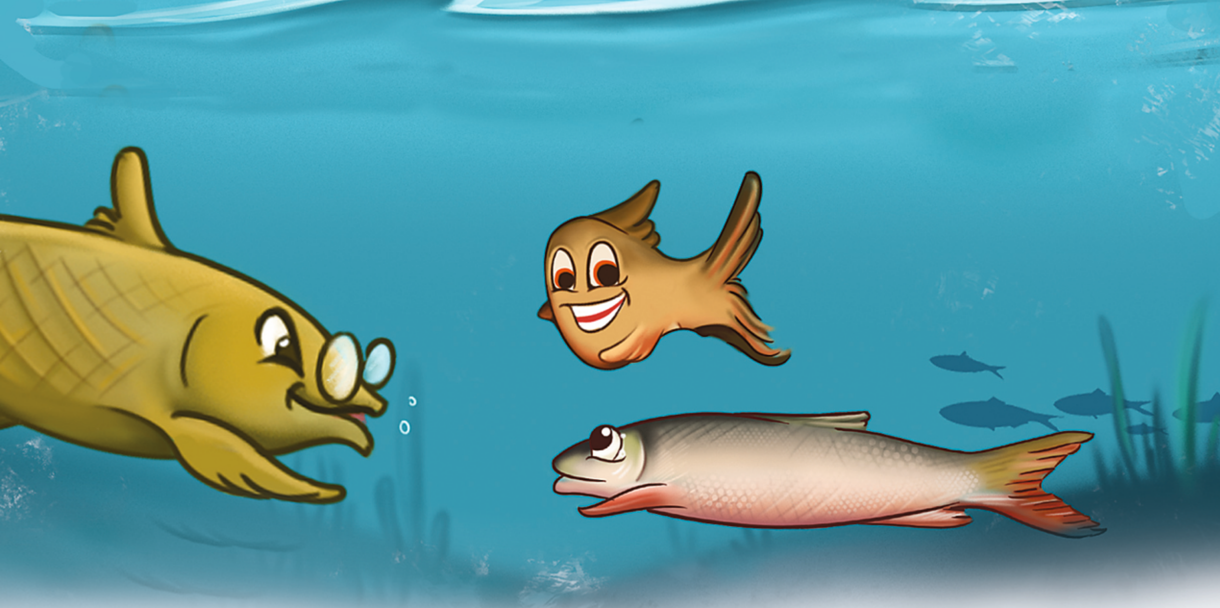

सिंघूः – चलो–चलो सब कहानी सुनते हैं। हाँ...हाँ दादी सुनाओ ना कहानी... बताओ ना... हम मछलियाँ कहाँ से आयीं... कैसे बनीं...?

सोनाः – हाँ, बिल्कुल ठीक बोल रहे हो सिंघू सबसे पहले तुम सबको अपनी गौरवशाली उत्पत्ति की कहानी जाननी ही चाहिये। जानते हो पुराणों में हमें इस धरती पर उत्पन्न होने वाला सबसे पहला अवतार माना गया है। यानी धरती पर जो पहला जीवन उत्पन्न हुआ वो पानी में ही हुआ। अगर साइंस की बात करें तो वो अमीबा के नाम से जाना गया, और पुराणों की बात करें तो उसे मत्स्यावतार के रूप में बताया गया है। ये ही कारण है कि हमें पूजा जाता था..... पूजते तो आज भी हैं लेकिन......।

टीनाः – पुराण .... पुराण क्या होता है ? नानी... और मत्स्यावतार ये क्या होता है नानी....? हमें पूजा जाता था ? अब क्या करते है ? अब नहीं पूजते क्या ?

सोनाः – अरे रूको ..रूको जरा सांस तो लेने दो....एक साथ इतने सारे प्रश्न ? मेरे प्यारे बच्चों हमारे ऋषि मुनियों ने जो ग्रंथ लिखे वो ही पुराण कहलाये। जानते हो– हमारे ऋषि–मुनियों ने जो पुराण लिखे उनमें विज्ञान छुपा है। पुराणों में एक पुराण मत्स्यपुराण उसमें ही हमें मत्स्यावतार के जन्म का विवरण है। जब पृथ्वी जलमग्न थी और चारों तरफ पानी ही पानी था....तब पृथ्वी पर पहले जीव का जन्म हुआ और विज्ञान का भी यही मानना है।

सिंघूः– और गंगा........, गंगा क्या उस समय बनी नानी?

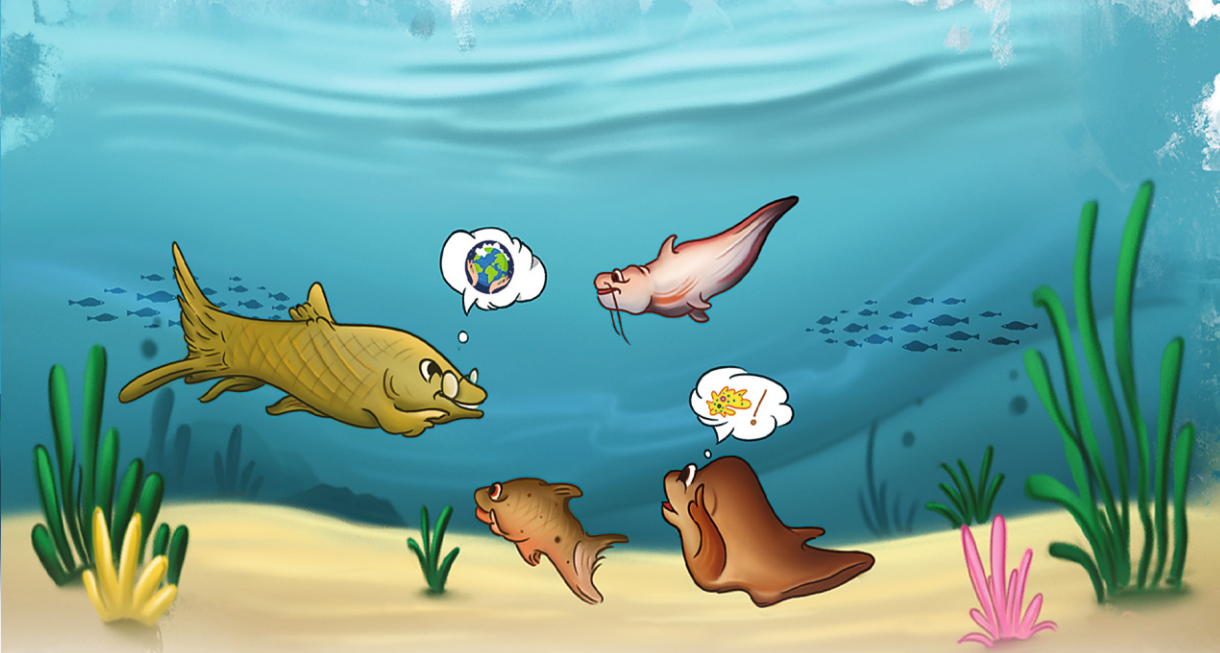

सोना: – गंगा के विषय में बहुत सी किवदंतियां हैं। जिनमें गंगा को देवनदी माना गया है। देवनदी मतलब देवताओं की नदी और वो देवताओं के साथ स्वर्ग में रहती थी।

रोहू: – गंगा स्वर्ग में रहती थी.....? तो क्या हम भी स्वर्ग में रहते थे दादी.....? कितना मजा आता होगा ना तब... सुना है स्वर्ग बहुत सुंदर है। बताओ ना दादी क्यों आई गंगा स्वर्ग से पृथ्वी पे ? और पानी तो क्या सभी लोग पानी में रहा करते थे? पृथ्वी पर कोई नहीं रहता था क्या?

सोना: – अरे – अरे रूको.....! जरा साँस तो लेने दो, गंगा की कहानी से पहले हमें पृथ्वी की उत्पत्ति के बारे में जानना होगा। अरे, मेरे भोले बच्चे जब धरती थी ही नहीं, तो धरती पे जन्म कैसे होता? विज्ञान कहता है कि जब पृथ्वी का जन्म हुआ तो वो एक आग का गोला थी। उसे ठंडा होने में करोड़ों वर्ष लगे। पृथ्वी का तापमान जैसे–जैसे घटता गया ब्रह्मांड में गैसों का निर्माण होने लगा। फिर बने बादल और कई गैसों के सम्मिश्रण से बरसा पानी। पृथ्वी को ठंडा होने में कई करोड़ साल लगे। तब की पृथ्वी और आज की पृथ्वी में बहुत अंतर है।

कतली: – दादी तो पानी कम कैसे हुआ ?

सोना: – बताती हूँ... बताती हूँ..... तुम लोग बीच में टोक कर सब भुलवा देते हो। भई, अब मैं बूढ़ी हो गई हूँ! हाँ, तो मैं क्या बोल रही थी।

सिंधु: – दादी आप कह रही थीं ! धरती आग का गोला थी।

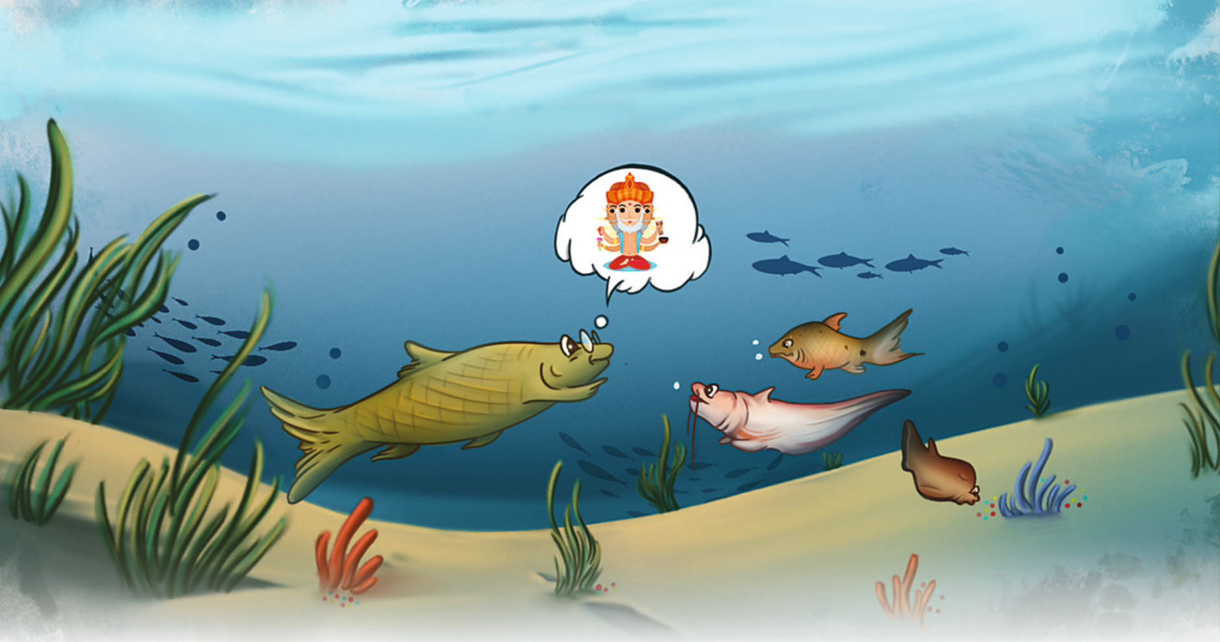

सोनाः — हाँ याद आया, धरती आग का गोला थी। जब धरती धीरे–धीरे ठंडी होने लगी तो जहाँ गड्ढे थे वहाँ पानी के जमाव से बने महासागर और जो सतह ऊँची थी वहाँ बनी हमारी आज की धरती। धीरे–धीरे पेड़, पौधे और वनस्पति पनपे और इस सुंदर धरा का निर्माण हुआ।

कतलीः— दादी हमने तो किताब में पढ़ा है कि पानी में पनपने वाला सबसे पहला जीव अमीबा था।

सोनाः— हाँ, विज्ञान का ऐसा ही मानना है और इन्हीं से जीवन की शुरूआत हुई। फिर जन्में उभयचर, उभयचर मतलब वो जीव जो पानी में भी रह लेते हैं और धरती पर भी। तुमने अपने भाई कछुए, मेंढक, सांप तो देखे होंगे वो सब उभयचर हैं। और इनके बाद पैदा हुए आसमान में उड़ने वाले जीव और सबसे अंत में मानव का जन्म हुआ। अरे देखो तो ..... हम असली कहानी छोड़कर कहाँ पहुंच गये। तो हम बात कर रहे थे मत्स्यावतार की तुम्हें मैनें पुराणों के विषय में बताया था।

कतलीः — हाँ, दादी बताया था कि पुराण हमारे ऋषि मुनियों ने लिखे।

सोनाः — तो उन्हीं पुराणों में एक पुराण है मत्स्य पुराण। उसमें हमारे जन्म की कहानी लिखी है। पुराणों के अनुसार संसार में चार युग हुए सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग और कलयुग। हर युग को भगवान विष्णु का एक दिन माना गया है, जो लगभग चार अरब वर्ष के बराबर माना गया है और

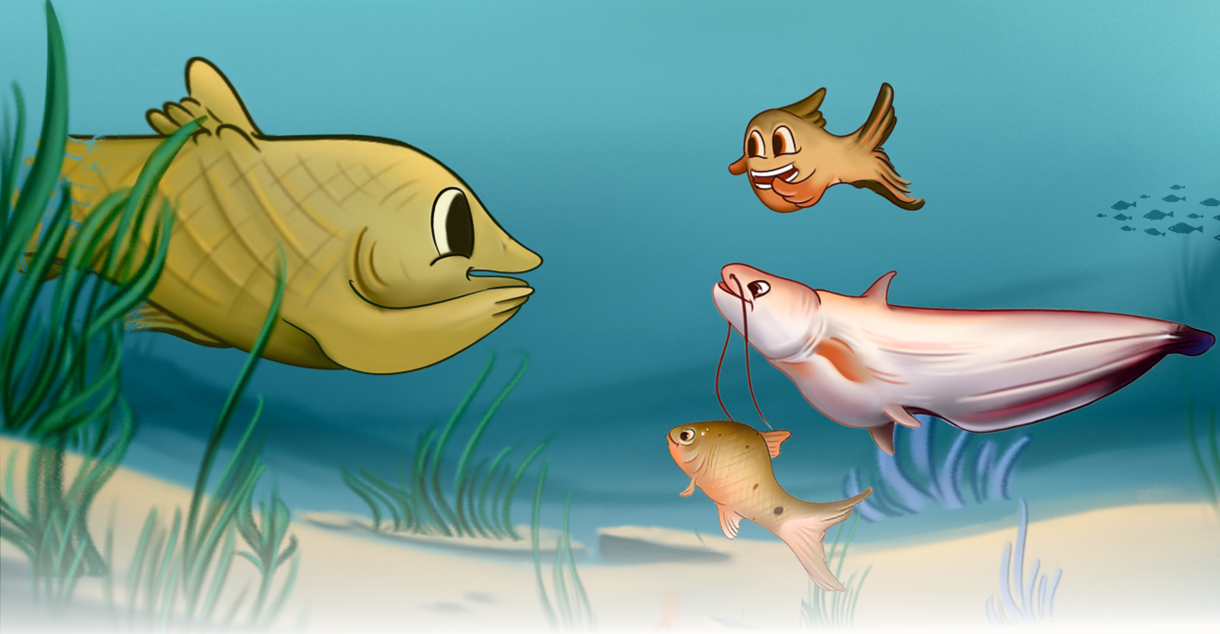

हर युग का अंत हो जाता है। वेदों को लिखने वाले और सृष्टि के रचियता ब्रह्मा ही हैं और भगवान विष्णु इन सबके संरक्षणकर्ता।

संघूः – संरक्षणकर्ता.....! ये क्या होता है नानी ?

सोनाः – संरक्षणकर्ता मतलब है जब भी धरती पर कोई संकट आता है तो भगवान विष्णु किसी अवतार के रूप में जन्म लेकर पृथ्वी की रक्षा करते हैं। भगवान विष्णु के दस अवतारों में से पहला अवतार है मत्स्यावतार। सुनो बच्चों मैं तुम्हारे, अपने और सारे मछली समुदाय के जन्म की कहानी सुनाउँगी लेकिन जब तुम लोग खाना खा लोगे।

सारे बच्चे एक साथः– नहीं दादी, हम पहले कहानी सुनेंगे, खाने के बाद फिर आप सोने के लिए बोलोगी और कहानी नहीं सुनाओगी............।

सोनाः – नहीं बोलुंगी सोने के लिए! वादा रहा....! पर पहले चलो कुछ खा लेते हैं। मुझे बहुत तेज भूख लगी है। तुम चाहते हो तुम्हारी दादी भूखी रहे ?

बच्चेः – नहीं दादी पर आपको खाने के बाद कहानी सुनानी होगी। हम बिना कहानी सुने नहीं सोयेंगे।

सोनाः – चलो, फिर देखें कि आज क्या बना है खाने में?

बच्चे :– जल्दी–जल्दी खाना खाते हैं,,,,,,, चलो दादी जल्दी फिर आप बोलोगी रात ज्यादा हो गई है।

सोनाः – चलो आगे की कहानी शुरू करते हैं। राजा मनु भगवान विष्णु के बहुत बड़े भक्त थे। मनु भगवान विष्णु साक्षात दर्शन करना चाहते थे उन्होंने हजारों वर्षों तक कठोर तप किया। सतयुग समाप्ति की कगार पर था। और एक भीषण बाढ़ आनी थी, जिससे कि पृथ्वी पर रहने वाले सभी जीवों की समाप्ति तय थी। इसके बाद एक नये युग की शुरूआत होनी थी। तुम्हें याद है ना, मैने बताया तुमको कि चार अरब वर्ष का एक युग होता है और ब्रह्मा एक युग के समाप्त होने के बाद सो जाते हैं?

रोहुः – हाँ, दादी याद है,............

सोनाः – हाँ, तो सृष्टि की रचना करते–करते जब ब्रह्मा सो रहे थे तो उनकी नाक से हयग्रीव नामक एक राक्षस प्रकट हुआ उसने देखा कि भगवान सो रहे हैं, उपयुक्त समय जान कर हयग्रीव ने वेदों का सारा ज्ञान पी लिया और समुद्र के गर्भ में छुप गया। भगवान विष्णु बहुत चिंतित हुए कि वेदों का ज्ञान अगले युग तक नहीं जा पायेगा।

टीनाः – नानी वेद क्यूँ नहीं जा पायेंगे अगले युग तक और अगले युग तक जाना क्यों जरूरी था?

सोना – अरे मेरी भोली बच्ची तुम्हें याद है? मैंने बताया था कि विष्णु सृष्टि के संरक्षणकर्ता हैं। तो वेदों के ज्ञान का संरक्षण करना भी तो उन्हीं का काम है ना....., तो इसीलिए उन्हें लगा कि नये युग के लोग वेदों का ज्ञान कैसे

पायेंगे, जबकि उन्हें एक असुर ने पी लिया है। इसी चिंता में उनका ध्यान मनु की ओर गया भगवान को लगा यही वो व्यक्ति है जो वेदों को बचा सकता है। अगली सुबह जब मनु तपस्या में लीन होने से पहले नदी में स्नान करने गये, उन्होंने जल अपने हाथ में लिया और भगवान को समर्पित करने लगे कि तभी उन्हें एक आवाज आयी "हे राजा मुझे नदी में प्रवाहित मत करो" उन्होंने देखा कि उनके हाथों में एक छोटी मछली है। मनु ने मछली पर दया करते हुए उसे अपने कमंडल में डाल दिया ताकि वो सुरक्षित रहे।

कतलीः – कमंडल.... कमंडल क्या होता है?

सोनाः – अरे तुम सब बहुत प्रश्न पूछते हो ! अब तुम्हें कमंडल भी नहीं मालूम? स्कूल में क्या पढ़ाते हैं तुम्हे? पता नहीं पढ़ाई का क्या स्तर हो गया है बच्चों को कुछ पढ़ाते ही नहीं। कमंडल एक लोटे जैसा होता है जिसमें एक हैंडल जैसा लगा होता है और हमारे ऋषि मुनि पानी के लिए लोटे की जगह कमंडल का ही इस्तेमाल करते हैं। हाँ, तो मैं क्या बोल रही थी? हाँ याद आया राजा ने मछली को कमंडल में रख दिया। सुबह राजा को कमंडल में से आवाज आयी राजन् मुझे कमंडल से निकालो! इसमें मेरे लिए जगह कम पड़ रही है। राजा ने देखा कि मछली का आकार बढ़ गया है, जो कि कमंडल में नहीं आ पा रही है। राजा ने उसे एक बड़े पात्र में रख लिया। शाम को फिर से आवाज आई तो राजा ने देखा कि मछली का आकार बढ़कर पात्र से बाहर आ गया है, राजा अचरज में पड़ गये।

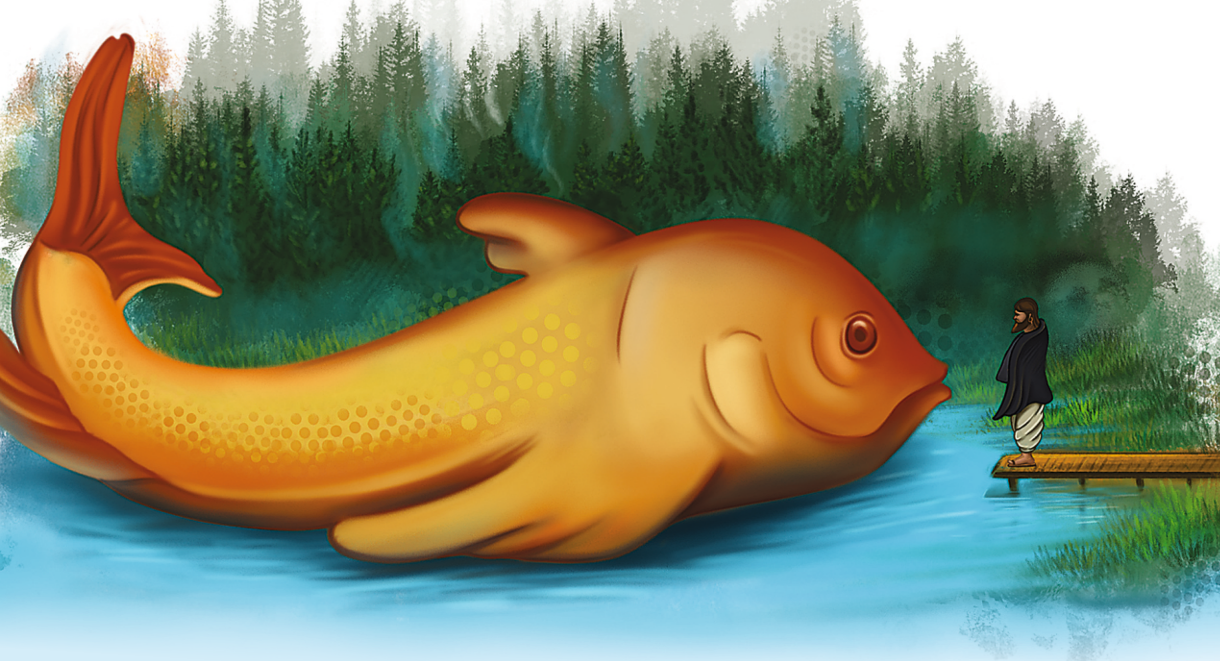

राजा ने भाग कर मछली को नदी में डाल दिया अचानक मछली ने राजा को बोला कि हे राजन! मुझे नदी में अकेले छोड़कर मत जाओ। राजा ने देखा कि आकार इतना बढ़ गया कि उसने पूरी नदी को ढक दिया है। राजा ने उसको नदी से निकालकर समुद्र में डाल दिया वो क्या देखते हैं कि मछली के आकार ने समुद्र को भी पूरी तरह से ढक लिया है।

सारे बच्चे आश्चर्य से: – इतनी बड़ी मछली....... समुद्र को भी ढक लिया? फिर ....फिर क्या हुआ ? समुद्र में तो और भी जीव रहे होंगे उनका क्या हुआ?

सोना: – हँसते हुए,,,,, अब ईश्वर की महिमा ईश्वर ही जाने! सभी का वो ही तो रखवाला है। हाँ तो आगे सुनो! मछली के इतने बड़े आकार को देखकर राजा के मन में विचार आया सम्भवतय: ये हरि ही हैं। राजा ने हाथ जोड़कर कहा "नारायण ये आप ही हो"। विष्णु भगवान ने हँसते हुए कहा कि तुम मुझे देखना चाहते थे ना तो मैं स्वयं ही आ गया। राजा ने देखा कि मछली की नाक में सींग उग आया है। राजा मनु ने भगवान को प्रणाम करते हुए कहा भगवान आपने मेरी इच्छा को पूरा कर दिया आप बतायें कि मेरे लिए क्या आदेश है। मछली के भीषण रूप में नारायण ने कहा कि सात दिनों में युग समाप्त होने वाला है, भीषण जल प्रलय आयेगी और संसार से सभी जीव–जन्तु, पेड़–पौधे नष्ट हो जायेंगे। तुम एक बड़ी नौका बनाओ, उसमें सभी प्रजातियों के पेड़–पौधों के बीज, सभी जीवों के नर और मादा, सात ऋषि तथा अपने परिवार के साथ

नौका में सवार होकर जाओ, साथ ही वासुकी नाग को भी अपने साथ लेकर जाना।

रोहूः – दादी ! वासुकी नाग............वासुकी नाग कौन है? उसे ले जाने को क्यों बोला ?

सोनाः – ओहो! तुम बहुत प्रश्न करते हो बीच में टोकोगे तो कहानी पूरी कैसे होगी। अभी बहुत बड़ी कहानी है और सोना नहीं है क्या ? तुम्हें सुबह स्कूल भी तो जाना होगा। फिर दिन चढ़े तक सोते रहोगे। जल्दी से मत्स्यावतार की कहानी पूरी करेंगे, बाकी की कहानी बाद में सुनेंगे। हाँ तो! भगवान विष्णु के आदेशानुसार मनु ने एक बड़ी नौका बनाई और उस पर वो सब लादा, जो नारायण ने बताया था, समुद्र में नौका उतार दी आसमान से तेज वर्षा होने लगी, सम्पूर्ण पृथ्वी जलमग्न हो गई, समुद्र में तेज लहरें उठने लगीं। तेज वर्षा और तूफान की वजह से जब नौका लड़खड़ाने लगी, तो मत्स्यावतार रूपी विष्णु प्रकट हुए, मनु ने उनके सींग में वासुकी नाग की रस्सी बाँधी और नौका सुरक्षित किनारे पर लगा ली। इस प्रकार नौका में रखे सभी सामान से सृष्टि की दोबारा संरचना की गई। समझ गये वासुकी नाग की जरूरत क्यों थी ?

कतलीः – दादी, वेदों का क्या हुआ हयग्रीव ने उन्हें खा लिया? वेदों का सारा ज्ञान असुरों ने ले लिया क्या ?

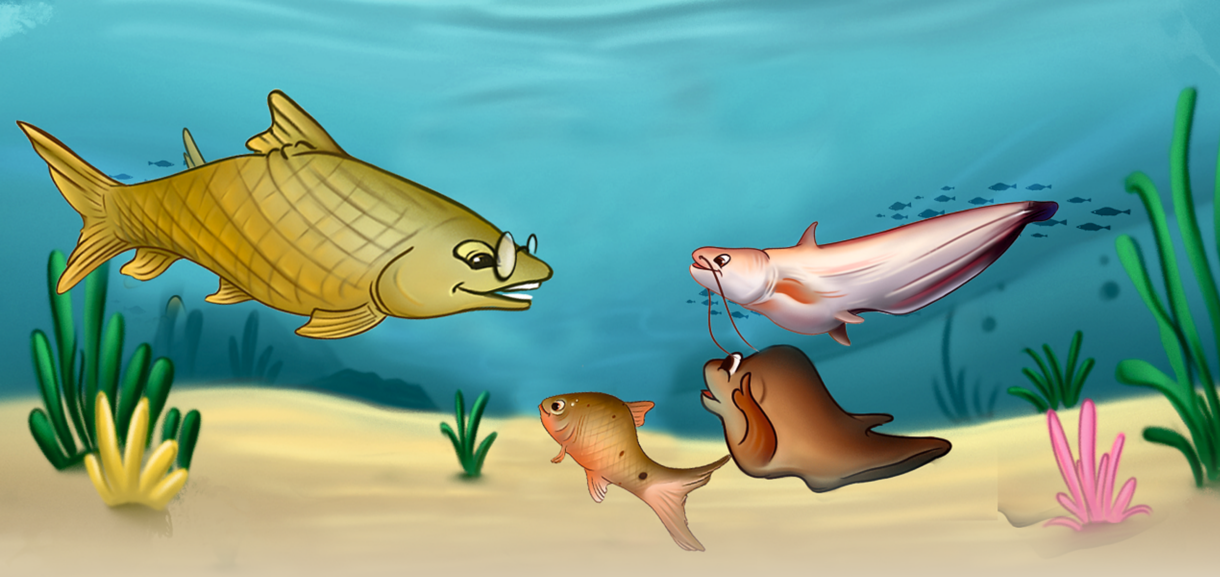

सोनाः— अरे हाँ, हयग्रीव और वेदों के बारे में बताना तो मैं भूल ही गई, याददाश्त कमजोर हो गई है उम्र के साथ—साथ। हाँ तो मनु को आदेश देकर जब मत्स्यावतार रूपी विष्णु समुद्र के दुसरे छोर पर गये तो देखा कि हयग्रीव वेदों की रक्षा कर रहा है। इतनी बड़ी मछली को देखकर हयग्रीव डर गया, लेकिन फिर भी उसने लड़ने का प्रयास किया पर वो कहाँ जीत पाता, विष्णु ने वो सारे वेद हयग्रीव से ले लिए जो कि आगे चलकर हमारे ऋषि मुनियों के लिए ज्ञान प्राप्त करने के साधन बने। तो बच्चों ये थी! सृष्टि की उत्पत्ति की कहानी और अवतारों में सबसे पहले अवतार मत्स्यावतार यानी हमारे जन्म की कहानी।

रोहूः — तो दादी हम तो बहुत ही महत्वपूर्ण हैं फिर। दादी क्या मछलियाँ गंगा के अलावा और नदियों में नहीं होती हैं?

सोनाः — हँसते हुए ! अरे नहीं मेरे भोले बच्चों हमारी गंगा की तरह सभी नदियों में मछलियाँ रहती हैं, और नदियों में ही नहीं तालाबों, झीलों और समुद्र में भी रहती हैं। और तुम्हें मालूम है.... कि समुद्र की मछलियाँ नदियों के मीठे पानी में अपने बच्चों को जन्म देने आती हैं।

कतलीः — दादी तो क्या उन मछलियाँ के बच्चे नदियों में ही रहते हैं? अपने माँ—बाप से नहीं मिलते? और ये मीठा पानी? मैं तो रोज पीती हूँ ये पानी पर ये तो फीका होता है। समुद्र का पानी कैसा होता है?

सोनाः — हँसते हुए! अरे भाई एक साथ इतने प्रश्न, एक—एक करके तो पूछो पता है ना, मैं बूढ़ी हो चुकी हूँ। देखो हमारी नदियों में जो पानी होता है, वो ज्यादातर ग्लेशियरों से या फिर पानी के किसी प्राकृतिक स्रोत से आता

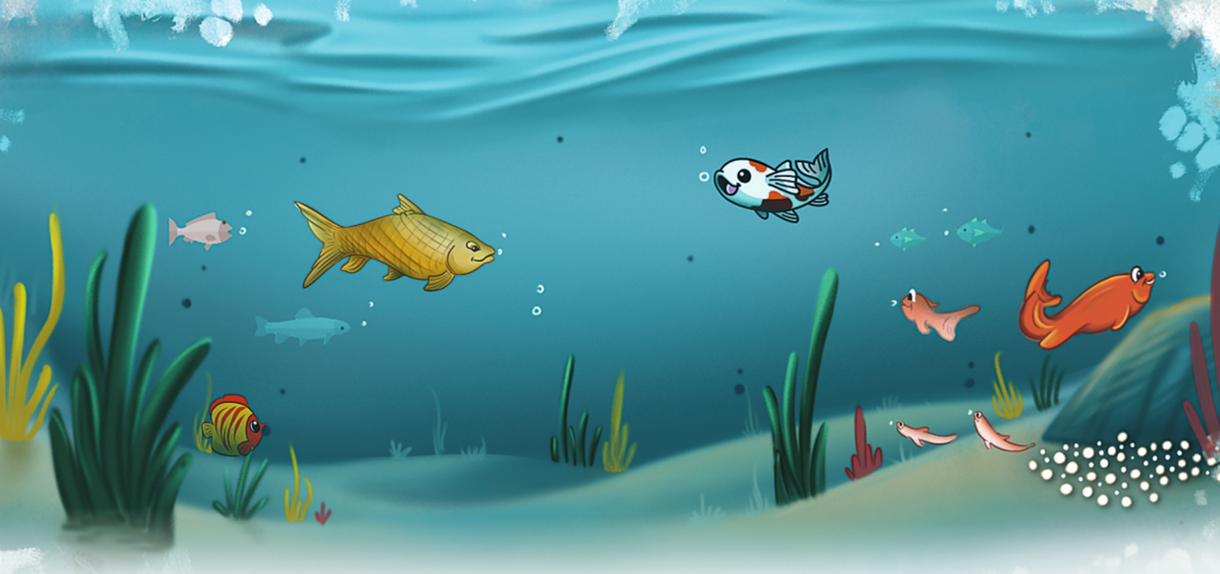

है और यही पानी मनुष्यों के पीने लायक होता है, इसे ही मीठा पानी कहते हैं और जो समुद्र का पानी होता है, वो खारा होता है और खारा पानी मनुष्य के पीने लायक नहीं होता है। इसी तरह कुछ मछलियाँ या अन्य जानवर ऐसे होते हैं जो केवल मीठे पानी में ही रह पाती हैं, कुछ केवल खारे पानी में, और कुछ दोनों में ही रहती हैं। कुछ मछलियाँ खारे पानी में रहती है लेकिन वो प्रजनन के लिए मीठे पानी में आती हैं।

रोहू: – प्रजनन, ये क्या होता है दादी?

सोनाः – प्रजनन का मतलब संतान को जन्म देना और जो मछलियाँ समुद्र से मीठे पानी में अपने अण्डे देने आती है अण्डे देकर वो समुद्र में वापिस चली जाती हैं। अण्डों से जब बच्चे निकल जाते हैं तो वे निकल पड़ते हैं अपने माँ बाप रिश्तेदारों की खोज में समुद्र की ओर। मालूम है हमारी गंगा में भी आती है एक हमारी समुद्री बहन हिलसा। पर,,,,।

कतलीः – पर, क्या नानी.........?

सोनाः – दरअसल बच्चों अब मनुष्य जो हमारे सबसे बड़े मित्र थे, वो अब अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए हमारे ही शत्रु बन चुके हैं लेकिन उन्हें पता नहीं है कि प्रकृति के नियमों से छेड़छाड़ उनके लिए भी कितनी घातक है। हमारा तो जो होना है वो होगा ही।

टीनाः – नानी, आप क्या बोल रहे हो? हमें तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है। आप कभी–कभी दुःखी क्यों हो जाती हो ?

सोनाः – हाँ, मेरे बच्चों मैं दुःखी होती हूँ अपनी उन प्यारी सहेलियों के लिए जो

बचपन में समुद्र से आकर हमारे साथ माँ गंगा की गोदी में अठखेलियाँ करती थीं। अब वो नदी में आ ही नहीं पातीं। अब कैसी होंगी वो सब कहाँ अपने बच्चों को जन्म देती होंगी।

रोहू :– पर दादी, आपने बताया नहीं कि अब क्यों नहीं आती वो नदी में ? उनका क्या नाम था?

सोना :– बच्चों उनका नाम हिलसा था तुम्हारी मौसियाँ ही थी वो, अब सुना है बंगाल की तरफ एक बहुत बड़ा डैम बना है फरक्का, जिसके कारण अब वो यहाँ नहीं आ पाती हैं। इंसान अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए प्रकृति के नियमों का उल्लंघन कर रहा है।

रोहू :– डैम,,,,,,, डैम क्या होता है दादी ?

सोना :– डैम को नदियों के पानी को रोक कर बनाया जाता है, जिनसे बिजली का उत्पादन किया जाता है। ये बिजली मनुष्यों के बड़े कल–कारखानों और फैक्ट्रियों में उपयोग में लाई जाती हैं।

कतली :– और दादी प्रकृति के नियम,,,, ये क्या होता है दादी ?

सोना :– हाँ प्रकृति के नियम! बच्चों इन नियमों को जानना हम सबके लिए बेहद जरूरी है क्योंकि हम सब इन नियमों से बंधे रहकर ही प्रकृति के संतुलन को बनाये रखने में अपना योगदान दे सकते हैं।

टीना :– हम अपना योगदान कैसे दे सकते हैं नानी ?

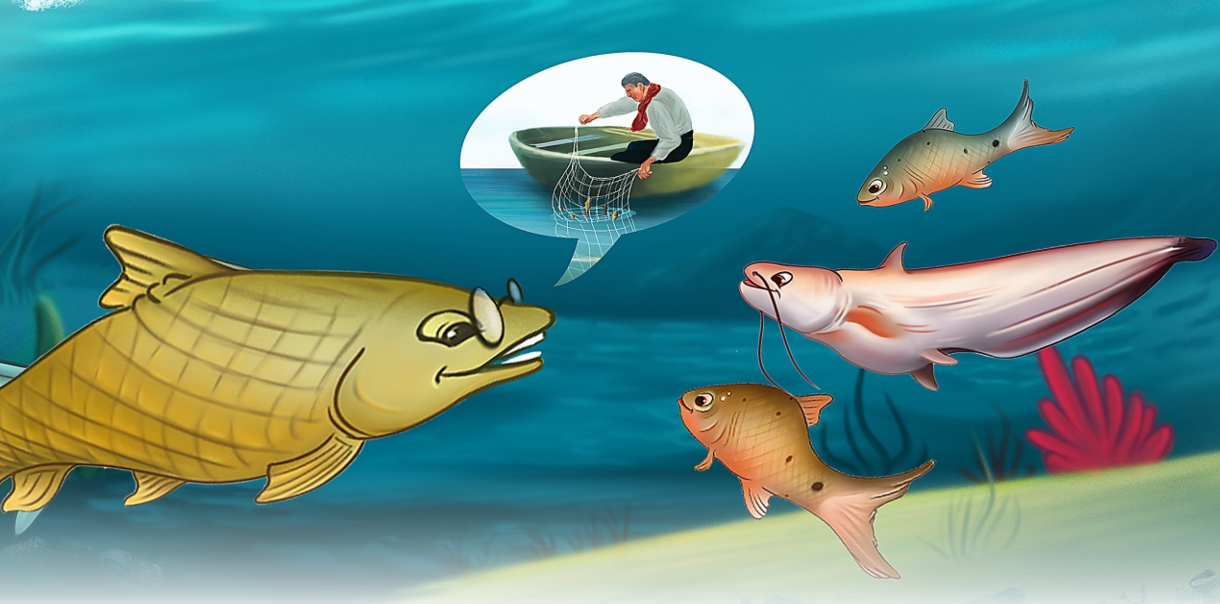

सोना :— बच्चों प्रकृति ने पृथ्वी पर रहने वाले प्रत्येक जीव के लिए कुछ नियमों का निर्धारण किया है, उन नियमों के हिसाब से ही हम सबकी भूमिका तय है। जैसे हम मछलियाँ खाद्य श्रंखला का एक अहम हिस्सा हैं। साथ ही बहुत से लोगों की आजीविका भी हमसे जुड़ी है। अब ये ना पूछना कि आजीविका क्या होती है? पहले ही बता देती हूँ! आजीविका मतलब है, कमाई का जरिया। गंगा के किनारे रहने वाले बहुत से समुदाय की आजीविका का जरिया हम ही हैं। वे हमें पकड़ने के लिए नदियों में जाल डालते हैं, और बाजार में हमें बेचकर अपने परिवार का भरण—पोषण करते हैं। लेकिन कई बार अधिक पैसा कमाने के लालच में वो बारीक जाल डालते हैं जिनमे हमारे छोटे बच्चे और अण्डे भी फँस जाते हैं और हम मछलियों की प्रजातियाँ उनके इस लालच की भेंट चढ़ रही हैं।

संघू — दादी ऐसे तो हम सभी मारे जायेंगे !

सोना — हाँ ये सच है कि अगर मनुष्यों ने मछलियों का इस तरह दोहन किया तो एक दिन ऐसा आ सकता है कि मछलियों की कई प्रजातियाँ खत्म हो सकती हैं, पर अगर उन्होंने सरकार द्वारा निर्धारित मोटाई वाले जाल का उपयोग किया तो इससे उनकी आजीविका भी बनी रहेगी और मछलियों की प्रजातियाँ भी बची रहेंगी। अब उन्हें भी तो अपने परिवार को पालना है ना! और हम तो पैदा ही सेवा करने के लिए हुए हैं ....! हम बहुत से जीवों की, और मनुष्यों की भोजन श्रृंखला का महत्वपूर्ण हिस्सा जो हैं।

सभी बच्चे :— अरे वाह! हम तो बहुत महत्वपूर्ण हैं,,,,,,,, चलो सब एक गीत गाएं.........

हम सब हैं बहुत ही अहम... हो हो ला ला हो हो ल ला ला

मानते हैं प्रकृति के नियम..... हो ल ला ला

बात जो आये भोजन की सबकी.... हो हो ल ला ला

हम हैं उपस्थित – हम हैं उपस्थित... हो हो ल ला ला

सोना :— अरे वाह ! तुम सब तो बड़े समझदार हो... कितने सुंदर गीत बनाया तुमने। काश ये समझदारी हमारे सदियों के साथी मनुष्यों में भी होती।

टीना :— नानी ! क्या मनुष्य समझदार नहीं होते ?

सोना :— अरे नहीं..... एक मनुष्य ही प्रकृति के बनाये सब जीवों में सबसे ज्यादा समझदार है, पर उसने अपनी समझदारी और इच्छाओं को इतना बढ़ा लिया है, कि उसे तो सब कुछ चाहिये और तुमने सुना है ना.... आवश्यकता ही अविष्कार की जननी है। तो मनुष्य ने अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए लगातार अविष्कार किये और नित्य इन नये अविष्कारों ने विनाश को भी जन्म दे दिया है।

कतली :— विनाश कैसा विनाश ? नानी हमें डर लग रहा है।

सोना :— डरने की बात तो है...... पर अभी भी संभल गये तो, इस पर काबू पाया

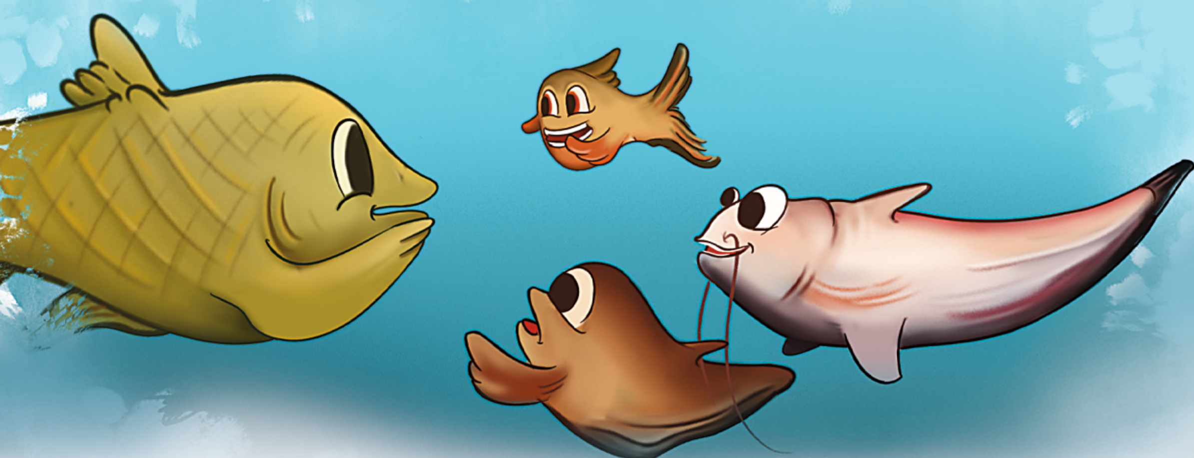

जा सकता है। काबू पाना बहुत आसान है पर सबको भागीदारी करनी होगी। सुना है सरकार भी इस मामले में काफी गम्भीरता से काम कर रही है। गंगा की स्वच्छता और उसकी जैवविविधता को बचाये रखने के लिए काफी कुछ हो रहा है। गाँवों में लोगों को जागरूक किया जा रहा है साथ ही उनकी आजीविका को बढ़ाने के लिए काम हो रहा है, स्वच्छता अभियान चलाये जा रहे हैं।

टीना :– नानी, लोग कैसे जागरूक होंगे ? क्या करना होगा उनको ?

सोना :– बच्चों ये बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न है। सभी को अपनी जिम्मेदारियों का अहसास होना ही जागरूक होना है।

कतली :– नानी आप बहुत घुमाकर बात करती हो। हमें कुछ समझ में नहीं आता, आप कहना क्या चाहते हो ? ठीक से बताओ ना नानी .... जागरूक होने के लिए क्या करना होगा ?

सोना :– अरे मेरे भोले बच्चों तुम बहुत नादान हो! चलो तुम्हें पहले ये बतायें कि जैवविविधता है क्या ? बताओ तो जैव का मतलब क्या है।

सारे बच्चे :– जैव का मतलब पक्का जीव ही होता होगा। है ना .... नानी?

सोना :– शाबास! जैव का मतलब सभी जीवों से ही है और उन सब के बीच जो विविधता होती है, उसे ही जैवविविधता कहते हैं। इसके अंदर वो सब

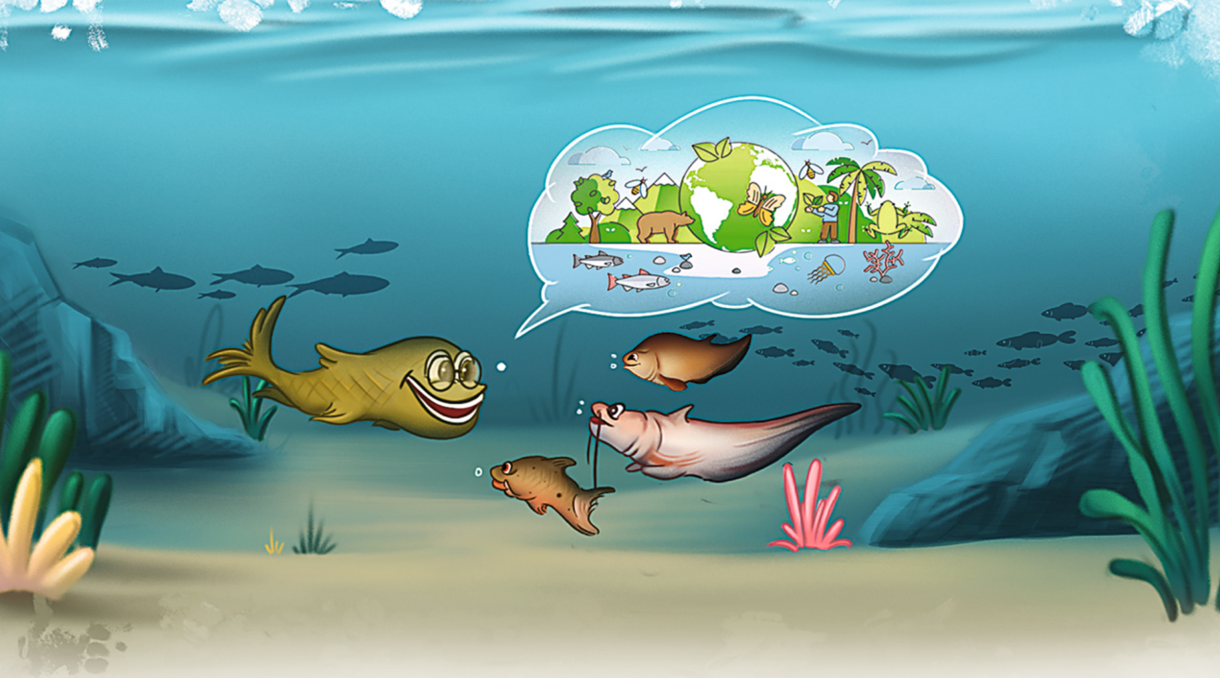

कुछ आता है जो हमारे आसपास मौजूद होता है। जैसे :– जीव, मनुष्य, पेड़–पौधे, वनस्पतियाँ सब कुछ। ये सब एक पारिस्थितिकी तंत्र से जुड़े हैं और किसी ना किसी रूप से एक दूसरे पे निर्भर रहते हैं। पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत बनाये रखने में सबकी अपनी–अपनी भूमिका होती है। और इस भूमिका को निभाने में एक छोटी सी चूक पारिस्थितिकी तंत्र के संतुलन को कमजोर कर देती है।

रोहू :– दादी कुछ–कुछ समझ में आ तो रहा है। स्कूल में भी हमें ये सब पढ़ाया जाता है। टीचर कहती हैं कि प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है जिसका हमारे पर्यावरण पर भी असर पड़ रहा है, वर्षा–चक्र में परिवर्तन आ गया है, ग्लोबल वॉर्मिंग बढ़ रही है। ये ग्लोबल वॉर्मिंग क्या होती है नानी ?

सोना :– बच्चों, तुम्हें पता है ना पृथ्वी गोल है? जो कि एक ग्लोब के रूप में दिखलाई पड़ती है। पूरी पृथ्वी का पर्यावरण अनेक कारणों से प्रभावित हो रहा है जिसके कारण हमारी पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है। इसे ही वैज्ञानिकों ने ग्लोबल वॉर्मिंग का नाम दिया है।

कतली :– नानी पृथ्वी का पर्यावरण क्यों बिगड़ रहा है ? ग्लोबल वॉर्मिंग क्यों बढ़ रही है नानी ?

सोना :– दो–दो प्रश्न एक साथ? चलो पहले बात करते हैं पर्यावरण की। तुम्हें पता है, कि सारी दुनिया पर्यावरण के प्रदूषण से जूझ रही है, और

धीर–धीरे ये समस्या विकट होती जा रही है। आज वैज्ञानिकों के बीच पर्यावरण प्रदूषण सबसे बड़ा बहस का मुद्दा है।

टीना :– पर्यावरण क्यों प्रदूषित हो रहा है ? उसके क्या कारण हैं ? वैसे तो स्कूल में हमारी टीचर ने हमें पढ़ाया था लेकिन हमें ज्यादा समझ में नहीं आया।

सोना :– अरे जब टीचर की बात ध्यान से सुनोगे ही नहीं तो समझ में कैसे आयेगा। ये बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है और हम सबके जीवन से जुड़ा है। पर्यावरण विषय बहुत ही बड़ा विषय है, इसे थोड़ा विस्तार से समझाना होगा। पर्यावरण के प्रदूषित होने के बहुत से कारण हैं। सबसे पहले तो तथा कथित विकास ही पर्यावरण के विनाश का सबसे बड़ा कारण है। लगातार बढ़ते उद्योग धन्धे, पॉलिथीन–प्लास्टिक का उपयोग, खाद्य पदार्थों में रासायनिक खादों का बढ़ता उपयोग, आधुनिकता की होड़ में उपकरणों का उपयोग तथा उनके खराब होने पर उनका अजैविक कचरा, ये सब पर्यावरण के स्वास्थ्य को बिगाड़ने के पर्याप्त कारण हैं।

रोहू :– दादी...... पर ये सब तो बहुत जरूरी है अगर मोबाइल फोन, कार, ए0सी0, उद्योग धन्धें सड़कें नहीं होंगे तो लोग रह कैसे पायेंगे ये सब तो मनुष्य के लिए बहुत ही जरूरी है। इनके बिना तो वो रह ही नहीं सकता।

कतली :— अरे छोड़ ना! तुझे क्यों तकलीफ हो रही है। हमें इससे क्या! हम तो पानी में मजे में रहते हैं। हमारे लिए थोड़े ही बिगड़ रहा है पर्यावरण।

रोहू :— ये सच है क्या दादी ?

सोना :— बच्चों ये सच नहीं है! बिगड़ते पर्यावरण का दुष्प्रभाव सभी जीवों पर पड़ रहा है। हम पर भी।

रोहू :— हम पर भी ? पर हम तो पानी में रहते हैं ना दादी ?

सोना :— ये सच है बच्चों कि हम पानी में रहते हैं पर पर्यावरण प्रदूषण का असर सारे जगत के जीवों पर पड़ रहा है। यहाँ तक कि नदियों तथा समुद्र में रहने वाले जीवों पर भी। मनुष्य विकास की दौड़ में अन्धा हो रहा है। तुम्हें पता है विकास की दौड़ में कितने ही जंगलों की आहुति हो रही है। जंगल कट रहे हैं, ग्लेशियर घट रहे हैं, नदियों में पानी घट रहा है।

टीना :— नानी नदियों में पानी घट जायेगा तो हमारा क्या होगा? हम मर जायेंगे? नदियों में पानी क्यों घट रहा है नानी?

सोना :— तुम्हें याद है ना, हम ग्लोबल वॉर्मिंग की बात कर रहे थे ?

सारे बच्चे :— हाँ—हाँ याद है......आपने बताया था कि धरती एक ग्लोब की तरह है।

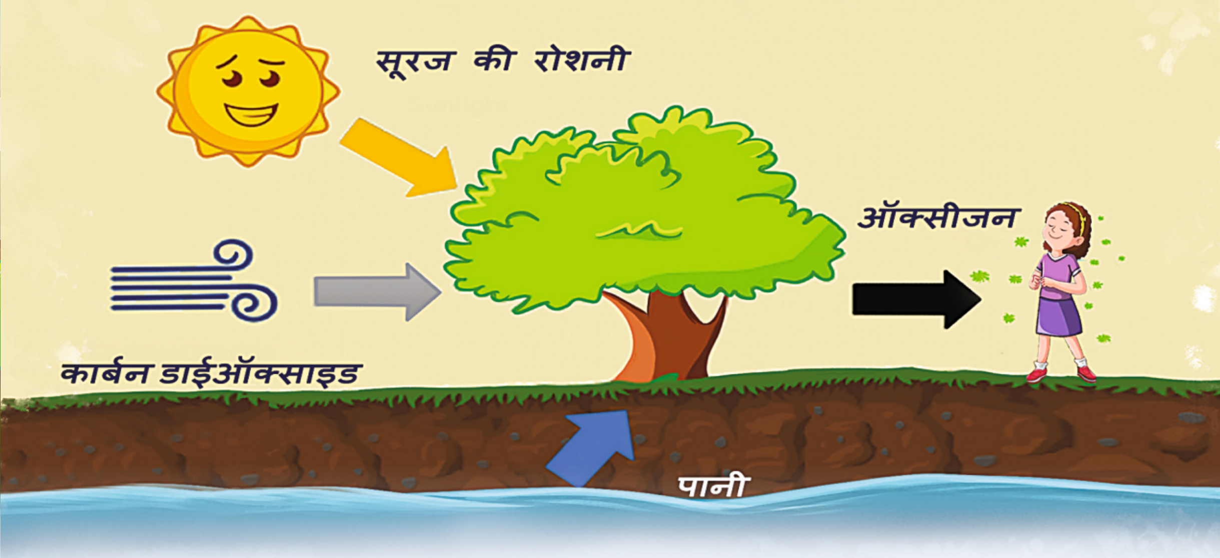

सोना :— शाबास! धरती गोल है और एक ग्लोब की तरह दिखलाई पड़ती है और क्योंकि पूरी धरती पर पर्यावरण के प्रदूषण का असर पड़ रहा है इस बढ़ते प्रदूषण के कारण धरती का तापमान बढ़ रहा है। इसका असर पूरी धरती पर पड़ रहा है तो वैज्ञानिक इसे ग्लोबल वॉर्मिंग कह रहे हैं।

रोहू :— दादी ग्लोबल वॉर्मिंग क्यों हो रही है और इससे क्या असर पड़ेगा ?

सोना :— हाँ बच्चों क्योंकि पर्यावरण में प्रदूषण बढ़ रहा है जिससे कि धरती का तापमान बढ़ रहा है। विकास की होड़ में अंधाधुंध कटते जंगल, जानते हो जंगलों का हमारे जीवन में कितना महत्व है ? जंगल हमें देते हैं प्राण वायु।

कतली :— प्राणवायु वो क्या होता है नानी?

सोना :— अरे प्राणवायु नहीं जानते तुम? प्राणवायु का मतलब है ऑक्सीजन और सारे प्राणी ऑक्सीजन के बिना जी नहीं सकते। पेड़ ऑक्सीजन छोड़ते हैं और कार्बनडाई ऑक्साइड लेते हैं। जैसे हम ऑक्सीजन वातावरण से सांस के द्वारा लेते हैं और जब सांस छोड़ते हैं तो कार्बनडाई ऑक्साइड को वातावरण में छोड़ देते हैं, जिसे पेड़ वातावरण से ले लेते हैं।

रोहू :— दादी तब तो पेड़ बहुत ही महत्वपूर्ण हैं?

सोना :— हाँ, मेरे बच्चों! पेड़ बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। अगर पेड़ बचेंगे तो जंगल बचेगा और बचेंगे उसमें रहने वाले प्राणी और हाँ प्राणवायु भी बनी रहेगी,

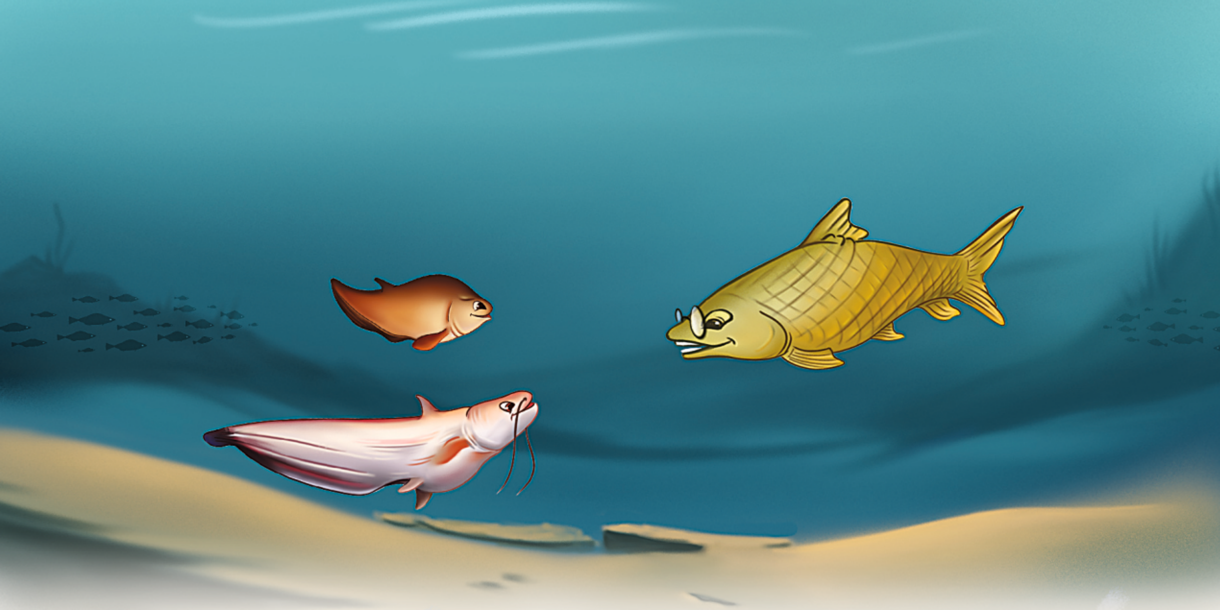

धरती पर हरियाली बनी रहेगी नदियाँ में पानी भी बना रहेगा और नदियाँ कल–कल बहेंगी।

टीना :– नानी नदियों में पानी रहेगा मतलब? क्या नदियों में पानी कम हो रहा है?

सोना :– हाँ! क्योंकि धरती का तापमान बढ़ रहा है जिसके कारण ग्लेशियर पिघल रहे हैं, जंगल कट रहे हैं तो जो पानी वर्षा के रूप में पड़ता है वो धरती के अंदर ना जाकर सीधे बह रहा है और साथ ही बह रही है मिट्टी, तुम्हें पता है कि पेड़ ही हैं, जो धरती पर पकड़ बनाये रखते हैं, उनकी जड़ों से होकर पानी पृथ्वी के अंदर चला जाता है और मिट्टी भी पेड़ की पकड़ में बंधी रहती है, लेकिन जंगलों के कटने की वजह से जो वर्षा जल होता है वो सीधे बह जाता है। कभी बाढ़ आ जाती है और कभी सूखा पड़ जाता है। ग्लोबल वॉर्मिंग का असर वर्षा चक्र पर भी पड़ रहा है।

कतली :– वर्षा चक्र ? ये वर्षा चक्र क्या होता है नानी ?

सोना :– तुमने पढ़ा होगा कि भारत में चार मौसम चक्र होते हैं। शीत, ग्रीष्म, वर्षा तथा शरद् और भारत में फसलें भी इन्हीं पर आधारित होती है। मौसम चक्र में परिवर्तन हो रहा है। जिसका असर फसलों पर पड़ रहा है। ये सब बहुत लम्बी बातें हैं, इन्हें समझाने में समय लगेगा। फिलहाल हम बात कर रहे थे, पर्यावरण प्रदूषण की और उससे होने वाले असर की। तुम थक गये हो, या अभी और सुनना चाहते हो?

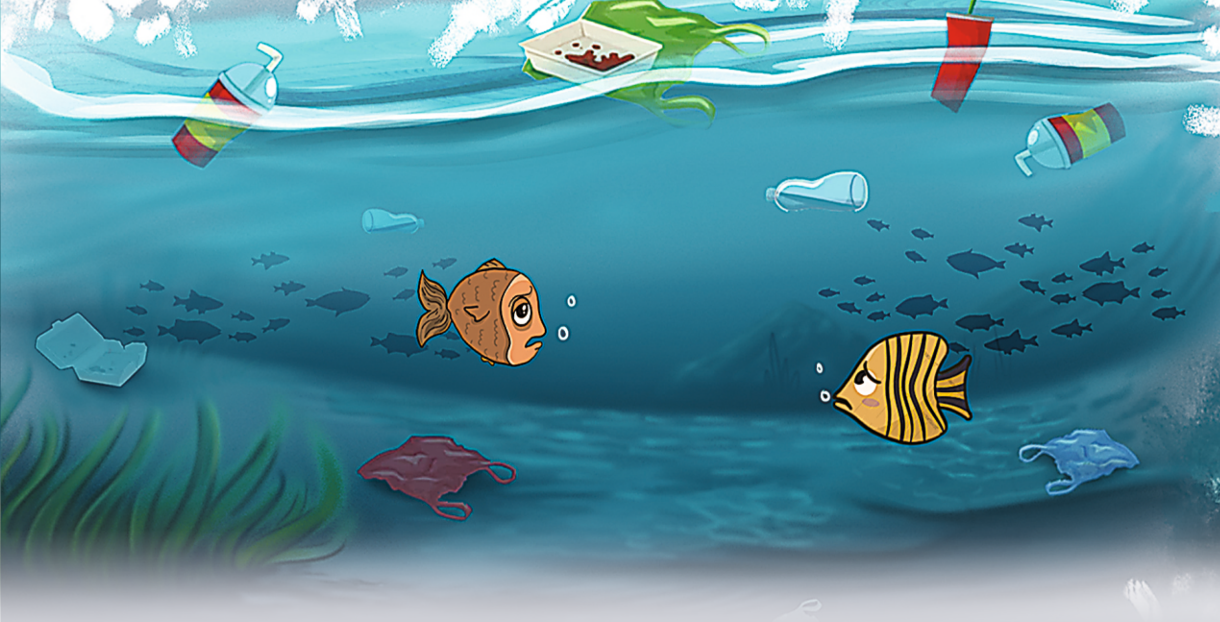

रोहू :– दादी, हमें बहुत मजा आ रहा है, हम अभी नहीं थके कितनी सारी बातें सीखने को मिल रही हैं। बताओ ना, नानी कि पर्यावरण प्रदूषण का क्या असर हो रहा है, हम पर और अन्य प्राणियों के जीवन पर।

सोना :– हाँ सबके लिए पर्यावरण के विषय में जानना बहुत जरूरी है, और ये भी कि हम अपने पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए किस प्रकार अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकते हैं।

कतली :– नानी सुना है पर्यावरण के प्रदूषण का असर नदियों के पानी पर भी पड़ रहा है? क्या ये सच है नानी?

सोना :– हाँ ये सच है, बिगड़ते पर्यावरण का, नदियों पर तथा नदियों के पानी पर भी पड़ रहा है। पानी के प्रदूषण के बहुत सारे कारण हैं। जिनके बारे में चर्चा करनी बहुत जरूरी है। बच्चों तुम नदी के भावी नागरिक हो हम तो बूढ़े हो गये हैं, अब ज्यादा दिन नहीं रहेंगे लेकिन तुम भविष्य के कर्णधार हो।

रोहू :– दादी नदियों में प्रदूषण क्यों हो रहा है ? उससे क्या होगा ?

सोना :– बच्चों पानी में प्रदूषण बढ़ने के बहुत से कारण हैं। क्या तुम जानते हो कि पहले लोग नदियों का पानी मनुष्य पी लिया करते थे। बहुत साफ होता था नदियों का पानी, किंतु अब प्रदूषण इतना बढ़ गया है कि पानी को बिना साफ किये पीना नामुमकिन है। नदियों में प्रदूषण बढ़ने के बहुत

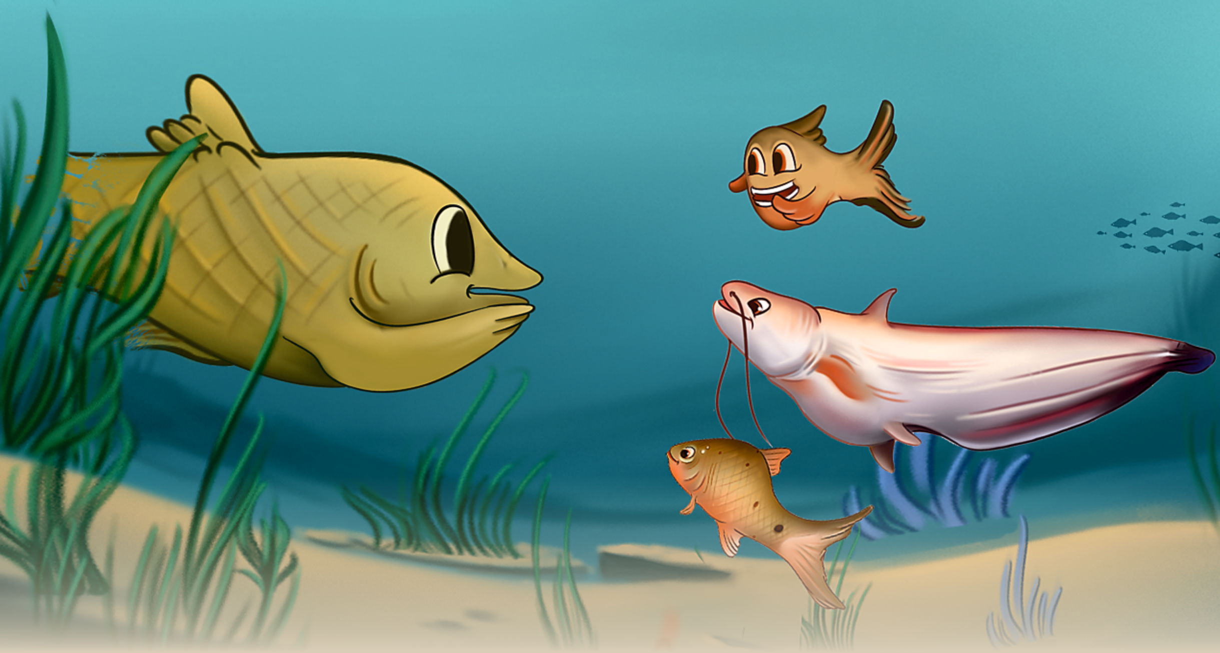

से कारण हैं। सबसे ज्यादा जो आजकल प्रदूषण बढ़ाने का कारण बन गया है वो है प्लास्टिक।

कतली :– पर नानी प्लास्टिक तो बहुत काम की चीज है। उसके बिना तो अब कुछ भी नहीं बिकता दूध से लेकर तेल तक, और फिर बाजार से सामान ले जाना कितना सरल है, घर से थैला भी नहीं ले जाना पड़ता।

सोना :– यही तो समस्या है मेरे बच्चे, लोग अब सुविधाओं के इतने आदि हो गये हैं कि उन्हें घर से थैला लेकर जाने में भी कष्ट होता है। हमारे जमाने में तो सब अपने घरों से थैले लेकर जाते थे तेल वगैरह के लिए भी घर से ही बर्तन या बोतल ले जानी पड़ती थी, दिक्कत तो होती थी पर जो दिक्कत अब आ पड़ी है, उसके सामने वो दिक्कत कुछ नहीं थी। प्लास्टिक ने तो पूरी धरती की ही सूरत बिगाड़ कर रख दी, सूरत ही नहीं स्वास्थ्य भी, बेचारी धरती माँ को साँस लेना भी दूभर हो गया है।

संघू :– दादी धरती का स्वास्थ्य कैसे बिगड़ रहा है? और धरती भी कोई साँस लेती है ?

सोना :– अरे तुम्हारी आवाज तो बड़ी देर बाद सुनाई दी मुझे लगा कि तुम सो रहे हो। मैंने तुम सबको पहले ही बताया कि धरती का पर्यावरण लगातार बिगड़ रहा है जिसमें प्लास्टिक की भूमिका सबसे ज्यादा है। क्योंकि अब सब सभी पैकेजिंग में अधिकांशतयः प्लास्टिक का उपयोग होता है या फिर अन्य पैकेजिंग जो कि बायोडिग्रेडेबिल नहीं होता।

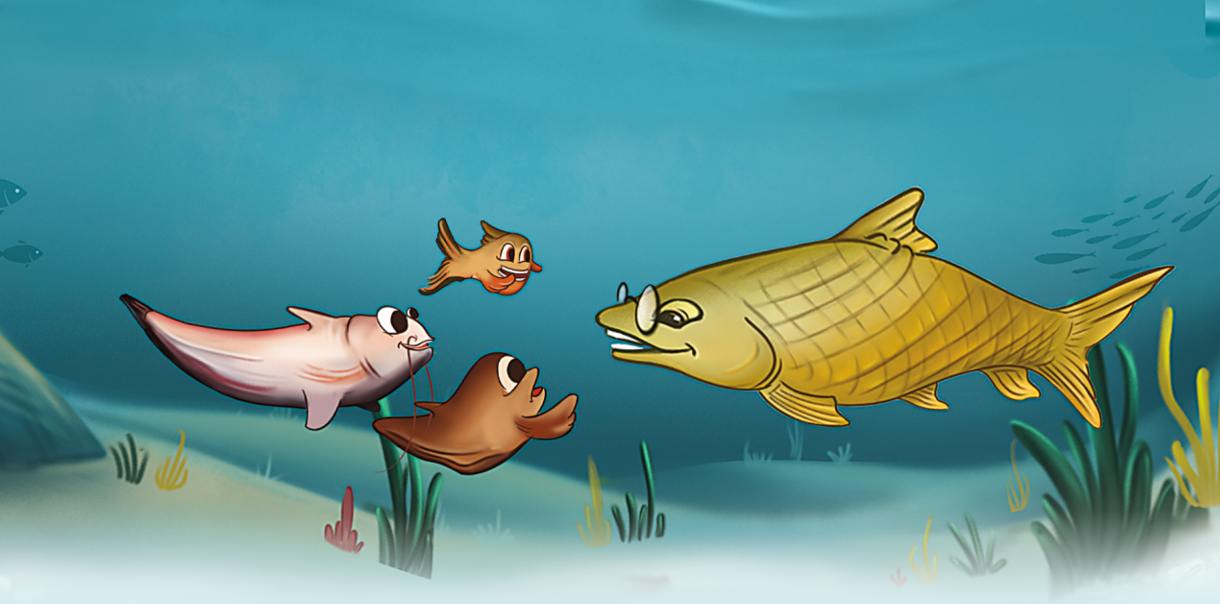

कतली :— बायोडिग्रेडेबिल.... ये क्या होता है नानी ?

सोना :— अरे हाँ, तुम लोगों को सबसे पहले बायोडिग्रेडेबिल क्या होता है ये जानना बहुत जरूरी है। बच्चों हम लोगों के द्वारा जो भी खाद्य पदार्थ पैकेजिंग या कोई भी अन्य सामग्री जिसको हम इस्तेमाल करने के बाद कचरे के रूप में फेंक देते हैं, वो दो प्रकार की होती है, पहली जैविक दूसरी अजैविक। जैविक कचरे को ही बायोडिग्रेडबिल कहा जाता है, जिसका मतलब होता है, वो कचरा जिसको कि उपचार के बाद उपयोग में लाया जा सकता है, और दूसरे प्रकार के कचरे का उपचार नहीं हो सकता ये होता है अजैविक कचरा। ये अजैविक कचरा ही हमारी धरती को बीमार कर रहा है।

रोहू :— दादी जैविक कचरा कौन—कौन सा होता है और उपचार के बाद कैसे उपयोग में लाया जाता है।

संघू :— और दादी अजैविक कचरे के बारे में भी बताओ।

सोना :— बच्चों जैविक और अजैविक कचरे के विषय में सभी को जानकार होने की जरूरत है। जैविक कचरे में वो सारा घरेलु कचरा आता है, जिसे हम खाद्य पदार्थों से पैदा करते हैं, जैसे सब्जी तथा फल के छिलके बचा खाना पेड़—पौधों के पत्ते छाल आदि इन सबसे जैविक खाद बन सकती है और इसे हम अपनी खेती, फूल—पौधों आदि में इस्तेमाल कर सकते हैं। दूसरे प्रकार के अजैविक कचरे में वो सब आता है, जिसका हम

आसानी से उपयोग नहीं कर सकते, जैसे प्लास्टिक, पॉलिथिन, दवाई के रैपर कोई भी इलैक्ट्रानिक उपकरण जिन्हें कि रिसाइकिल नहीं किया जा सकता है। तो बच्चों समझ में आया कुछ, कि हम जो कचरा उत्पादन करते हैं, वो कैसा होता है। अब ये भी जान लो कि इस समस्या का समाधान हम व्यक्तिगत रूप से भी कर सकते है।

संघू :– व्यक्तिगत रूप से......वो कैसे नानी ? पर कचरा तो व्यवसायिक भी होता है.....उसका क्या होता है ?

सोना :– हाँ मेरे बच्चों व्यक्तिगत रूप से..... । जो कचरा हम पैदा कर रहे हैं उसे साफ करने की जिम्मेदारी किसी और की, या सरकार की कैसे हो सकती है? हमारी अपनी व्यक्तिगत ही होगी ना ? और हमें अपनी प्यारी धरती को गंदा करने का कोई अधिकार नहीं है जब हम उससे कुछ ले रहे हैं तो दे क्या रहे हैं भाई ? उसके कर्ज को हम कैसे चुकायेंगे ?

सारे बच्चे :– बताओ ना नानी कैसे चुका सकते हैं, हम धरती का कर्ज ?

सोना :– बहुत आसान है, कर्ज चुकाना। अगर हम सब जागरूक हो जायें, और जान जायें कि कौन सा कचरा जैविक होता है और कौन सा अजैविक और उसका समुचित प्रबंधन ही धरती माँ के कर्ज को चुकाने में सार्थक कदम होगा।

रोहू :– प्रबंधन.....कैसा प्रबंधन दादी ?

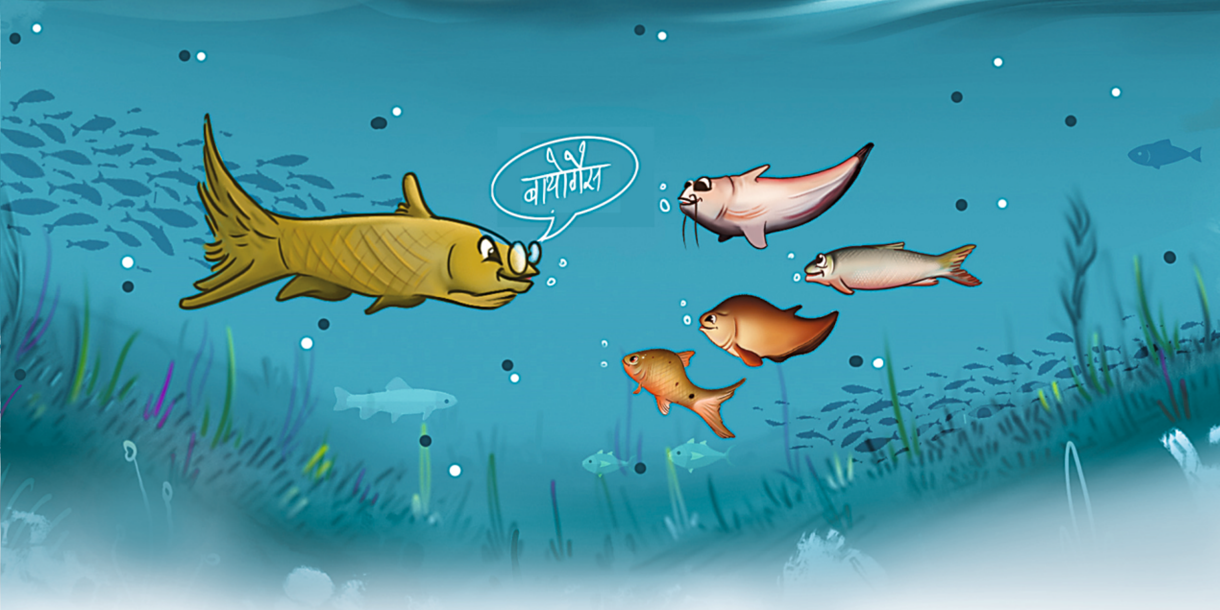

सोना :— हाँ कचरे का सही प्रबंधन ही हमें इस समस्या से निजात दिला सकता है। जानते हो हमें इसके लिए कचरे के दो डिब्बे बनाने होंगे, हो सके तो पहचान के लिए दोनों के रंग भी अलग कर सकते हो, हरा और लाल रंग चुन सकते हो, हरे रंग के डिब्बे में जैविक कचरा डालना होगा और लाल रंग के डिब्बे में अजैविक कचरा।

कतली :— फिर ? फिर उसका क्या करेंगे नानी ? वो तो बहुत ज्यादा हो जायेगा ना ?

सोना :— बताती हूँ...... बताती हूँ। जैविक कचरे को हम खाद में बदल सकते हैं, और उसे हम अपने खतों में, फूल पौधों में और फलदार पेड़ों में खाद के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं। और हाँ साथ ही बना सकते हैं बायोगैस....।

टीना :— नानी, आप तो हो एक दम कम्प्यूटर।

संघु :— चल पगली कम्प्यूटर नहीं गूगल... जानकारियों से भरपूर।

सोना :— मेरे बच्चों मैं कोई कम्पूटर—वम्पूटर नहीं हूँ। ये बाल धूप में सफेद नहीं किये हैं सब अनुभव है जिंदगी के। हाँ तो मैं कह रही थी कि जैविक कचरे से हम खाद बना सकते हैं और बायोगैस में इस्तेमाल कर सकते हैं, अजैविक कचरे के प्रबंधन का अभी कोई बहुत ठोस इंतजाम नहीं हैं। लेकिन अगर प्लास्टिक और पॉलिथिन का कम इस्तेमाल किया जाये तो कुछ हद तक इस समस्या को दूर किया जा सकता हैं।

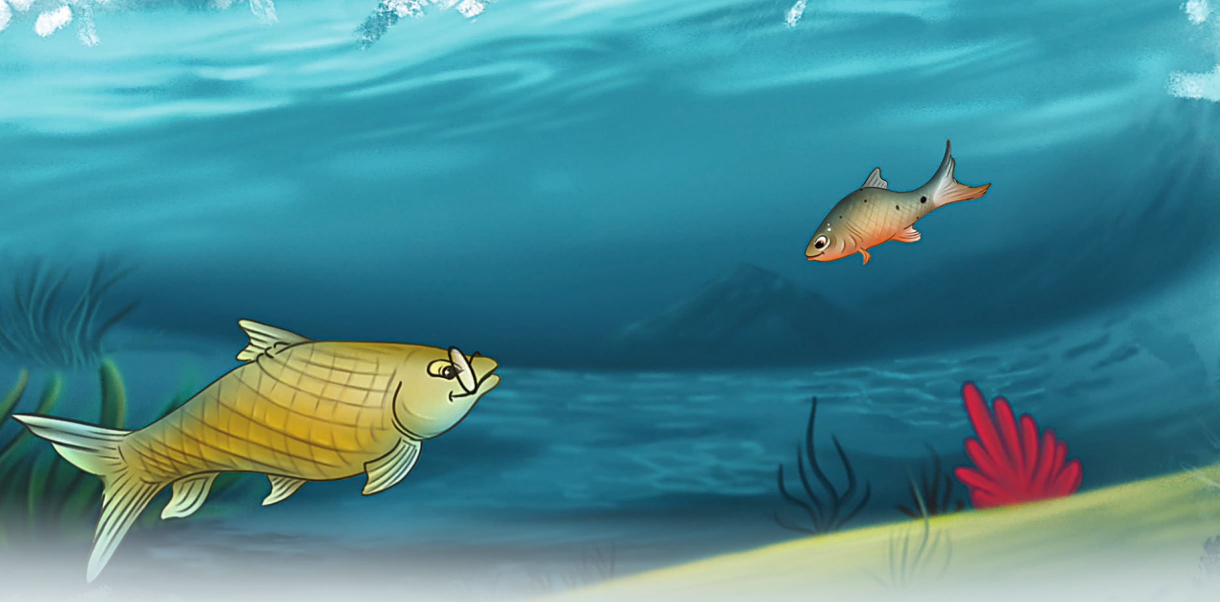

रोहू :— पर दादी हम क्यों परेशान हों......हम तो पानी में रहते हैं ना हमें तो कोई समस्या ही नहीं है। है ना नानी?

सोना :— नहीं ये बात नहीं है जितनी समस्या धरती पर है उतनी ही पानी में भी है। पानी लगातार प्रदूषित होता जा रहा है। जब पानी में प्रदूषण बढ़ेगा तो उसमें रहने वाले जीव जन्तुओं पे असर तो होगा ही ना....।

संघु :— नानी पानी में प्रदूषण क्यों हो रहा है? और इससे क्या होगा ?

सोना :— पानी में प्रदूषण बढ़ने के बहुत से कारण हैं....पर दुःख की बात है कि उनमें से ज्यादातर मानवजनित ही होते हैं।

कतली :— मानवजनित......? मानवजनित मतलब।

सोना :— मानवजनित मतलब मनुष्यों द्वारा जो भी किया जाता है वो मानवजनित होता है। तो.....मनुष्य कचरा तो पैदा करता ही है, साथ ही प्रकृति को हानि पहुँचाने के लिए बहुत से ऐसे काम करता है जिससे उनका भविष्य तो खतरे में ही है हम भी उनकी गलतियों की सजा भुगत रहे हैं।

रोहू :— गलती......कैसी गलती दादी ?

सोना :— हाँ गलती ! जानते हो इंसान ने विकास की अंधाधुंध दौड़ में प्रकृति की अनदेखी कर दी। प्रकृति ने इतना कुछ दिया है पर इंसान है कि बस.... सब भूल गया है।

संघु :– पर नानी ये तो बताओ कि पानी में प्रदूषण क्यों हो रहा है ?

सोना :– पानी में भी प्रदूषण मनुष्य ही बढ़ा रहा है। अब देखो ना! कलकारखानों का सारा गंदा पानी नदियों में ही तो जाता है और होटलों की गंदगी.... वो भी नदियों में ही और तो और.... जानते हो भारत में गंगा को एक देवी का दर्जा ही दिया गया है? हिंदू धर्म में तो लगभग सभी संस्कार गंगा के किनारे ही किये जाते हैं, और पता है इन संस्कारों में गंगा का बहुत महत्व है, पर ये संस्कार गंगा के स्वास्थ्य पर क्या असर डाल रहे हैं कोई नहीं जानता.....! ना–ना जानते तो सब हैं, पर कोई अमल नहीं करना चाहता। गंगा की पूजा करते हैं, और पूजा के बाद जो सामग्री बच जाती है उसे गंगा में प्रवाहित कर दिया जाता है। दाह संस्कार करने के बाद राख और शरीर के बचे अंग गंगा में प्रवाहित कर दिये जाते हैं। जबकि सरकार ने विद्युत शवदाह ग्रह बनाये हैं पर लोगों को लगता है कि बिना गंगा में प्रवाहित किये उनके पुरखों को स्वर्ग की प्राप्ति नहीं होने वाली।

रोहू :– पर दादी गंगा में जो भी गंदा होता है उसकी सफाई तो हम और हमारे जलीय जीव भाई करते हैं ना तो गंगा तो साफ हो ही जाती है। है.....ना ?

सोना:– हाँ ये सच है। नदियों की सफाई में हम और हमारे जलीय जीव भाइयों का बहुत बड़ा योगदान है। लेकिन उन पर भी तो संकट के बादल मंडरा रहे हैं।

संघू :– संकट....कैसा संकट नानी ?

सोना :– हाँ.........संकट ही आया हुआ है। जो पानी में प्रदूषण बढ़ गया है, उसके कई कारण हैं। फैक्ट्रियों से निकलने वाला कैमिकल युक्त कचरा और खेतों में कैमिकल मिली खाद का प्रयोग जो बाद में नदियों में ही मिल जाती है उनसे नदी और नदी में रहने वाले जीवों का स्वास्थ्य लगातार बिगड़ता जा रहा है और रही सही कसर हमारा और हमारे अन्य भाई बहनों के अवैध शिकार के कारण पूरी हो जाती है।

रोहू :– अवैध शिकार....दादी वो क्या होता है? और उससे क्या होता है?

सोना :– हाँ अवैध शिकार! जब कोई प्रजाति विलुप्त होने की कगार पर होती है या कोई प्रजाति संकटग्रस्त होती है तो उनके शिकार पर रोक लगा दी जाती है। तब उनका शिकार करने वाले छुपकर शिकार करते हैं इसी को कहते हैं अवैध शिकार। जानते हो वैसे तो गंगा माँ का जन्म ही अपने बच्चों के पालन पोषण के लिए हुआ है, माँ तो अपने बच्चों का पूरा ख्याल रखती है....पर बच्चे बदले में माँ के स्वास्थ्य का ध्यान नहीं रख रहे हैं। सुना है अब सरकार ने गंगा को साफ करने का बीड़ा उठाया है। सुनने में तो आ रहा है कि बहुत बड़े स्तर पर इस काम को अंजाम दिया जा रहा है। अब देखो क्या होता है ?

टीना :– हाँ नानी ! हमारे स्कूल में आजकल नमामि गंगे वाले आ रहे हैं। और हाँ

भारतीय वन्यजीव संस्थान से भी आ रहे हैं। पता है नानी, वो बच्चों को बाल गंगा प्रहरी बना रहे हैं और बच्चों को जलीय जीवों की, गंगा की जैवविविधता में क्या भूमिका है, और उनको कैसे बचाया जा सकता है, इसके विषय में जानकारी दे रहे हैं।

रोहू :– और दादी वो बच्चों के साथ मिलकर स्वच्छता कार्यक्रम भी चला रहे हैं, और बच्चों को जो आपने बताया था ना.....कचरा प्रबंधन वो भी सिखा रहे हैं, बहुत मजा आ रहा है दादी।

कतली :– नानी हम सब बाल गंगा प्रहरी बन रहे हैं और अपनी–अपनी भूमिका के विषय अच्छी तरह से जान पा रहे हैं।

सोना :– हाँ, मेरे बच्चों तुम देश का भविष्य हो.....देश का तो हो ही, किंतु गंगा को स्वच्छ एवं निर्मल बनाने की भी तुम पे बहुत जिम्मेदारी हैं। अभी से जागरूक होकर अपने भविष्य को तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित एवं स्वच्छ वातावरण दे पाओगे।

संघू :– चलो सब मिलकर गीत गाएं –

हम छोटे–छोटे बच्चे हम बाल गंगा प्रहरी हैं
मन के बड़े ही सच्चे हम बाल गंगा प्रहरी ।।
गंगा की लहरों के साथ चलें हम
गंगा है हमको प्यारी, हम हैं बाल गंगा प्रहरी ।।

प्रकृति ने बनाये नियम जो सारे
हमने वो जाने हमने वो माने, हम हैं गंगा प्रहरी।।
चलो मिल के गाएं...हम सब आगे आयें
हम हैं हम ही हैं बाल गंगा प्रहरी।।
हे हे हे हे हो हो हो हो हम हैं बाल गंगा प्रहरी।।
हम है हम ही हैं सब ही बाल गंगा प्रहरी।।

सोना :– चलो बच्चों! अब बहुत रात हो गई है ! सो जाओ सुबह स्कूल जाना है ना ?

संघू :– हाँ कल स्कूल में स्वच्छता अभियान भी है। नानी जो आपने हमें सिखाया है ना! मैं स्कूल में सारे बच्चों को बताऊँगा, उन्हें भी तो पता होनी चाहिए ना ये सारी बातें।

सोना :– हाँ भाई हाँ, जब जल्दी सोओगे तब ही तो जल्दी जागोगे, स्कूल जाने के लिए। चलो सब को शुभरात्रि.... ।।

जानकार बनें

गंगा की मछलियाँ

भारत की नदियों और अन्य मीठे पानी के पारिस्थितिकी तंत्र में मछलियों की लगभग 756 प्रजातियाँ पाई जाती हैं। केवल गंगा नदी में ही 143 प्रजातियाँ मौजूद हैं जो भारत के मीठे जल में पाई जाने वाली मछली प्रजातियों का 20 प्रतिशत हिस्सा हैं। गंगा नदी के निवास स्थल में नकारात्मक बदलाव, इसकी सहायक नदियों एवं आर्द्रभूमि में परिवर्तन, जल की गुणवत्ता में परिवर्तन एवं अत्यधिक दोहन का कई प्रजातियों पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है।

गंगा नदी में पाई जाने वाली मछलियाँ स्वस्थ पारिस्थितिकी का सूचक है एवं आहार श्रृंखला का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। गोल्डन महाशीर, वेल्लेगो, स्पॉटेड बार्ब ऐसी ही कुछ प्रमुख प्रजातियाँ हैं।

वेल्लेगो (वेल्लेगो अट्टू)

वेल्लेगो अट्टू कैटफिश प्रजाति की परभक्षी मछली है। ये मुख्यतयः बड़ी नदियों, झीलों और तालाबों में पाई जाती है। ये प्रायः भारत की सभी प्रमुख नदियों पोखरों एवं झीलों में पाई जाती है, जिस कारण ये भोजन श्रृंखला का अहम् हिस्सा हैं। बड़े तादाद में इनका शिकार तथा निवास स्थान का विनाश इनके प्रमुख खतरे हैं।

गोल्डन महासीर

मछली की यह प्रजाति पथरीली सतह वाली पर्वतीय नदियों में और झीलों में पाई जाती है। यह मीठे पानी की प्रजाति 13 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान में रह सकती है। यह सर्वाहारी मछली कीड़े–मकोड़े, शैवाल, छोटी मछलियाँ आदि को खाती है। शहरीकरण अवैध अतिक्रमण, शिकार के सुरक्षित तरीकों को ना अजमाया जाना। भौतिक एवं रासायनिक परिवर्तन से प्राकृतिक निवास स्थलों के विनाश के कारण इनकी संख्या में कमी आ रही है।

स्पॉटेड बार्ब

मछली की यह प्रजाति गंगा नदी के मध्य व निचले हिस्सों में पायी जाती है। इसकी पूंछ तथा ऊपरी पंख के नीचे एक गहरा धब्बा पाया जाता है। यह मानसून के दौरान प्रजनन करती है (अण्डे देती है), तथा प्रजनन काल में नर मछली के शरीर में एक लाल धारी विकसित होती है। इस प्रजाति के निवास स्थलों को हो रहे नुकसान तथा अत्यधिक दोहन ही इनके प्रमुख खतरे हैं।

ब्रॉन्ज फैदरबैक

यह प्रजाति भारत में गंगा के ऊपरी, मध्य और निचले हिस्सों में पायी जाती है। इस प्रजाति की मछली का शरीर अत्यधिक संकुचित, शरीर का रंग चांदी के समान तथा सिर पर कई भूरे व सफेद रंग के धब्बे होते हैं। यह मांसाहारी होती है तथा कीड़े, मछली छोटे जलीय जीव तथा जलीय पौधों पर निर्भर रहती है। बरसात के मौसम में स्थिर पानी में प्रजनन करती है, अपने अण्डों को जल में रहने वाली वनस्पतियों पर रखती है। उच्च बाजार मूल्य के कारण इनका अत्यधिक दोहन होता है। इसके अलावा इनके निवास स्थलों में बदलाव इस प्रजाति के संकटग्रस्त होने के मुख्य कारण हैं।

बाटा (लोबियो बाटा)

यह प्रजाति भारत में गंगा नदी के ऊपरी, मध्य और निचले हिस्सों में पायी जाती है। इसका शरीर लंबा तथा थूथन आगे की तरफ निकला होता है, जिसमें कई छिद्र होते हैं। यह पानी की निचली सतह पर रहती है, तथा मीठे पानी के बीच ही प्रवास करती है। यह शाकाहारी होती है। उच्च बाजार मूल्य के कारण अत्यधिक दोहन निवास स्थलों को हो रहे नुकसान तथा अतिरिक्त दोहन इनके प्रमुख खतरे हैं।

नमामि गंगे

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

NMCG

National Mission for Clean Ganga,
Department of Water Resources,
River Development & Ganga
Rejuvenation, Ministry of Jal Shakti,
Major Dhyan Chand Stadium,
India Gate, New Delhi - 110001

GACMC

Ganga Aqualife
Conservation
Monitoring Centre
Wildlife Institute of
India, Dehradun
nmcg@wii.gov.in

Wildlife Institute Of India

Chandrabani, Dehradun -
248001, Uttarakhand
t.: +91135 2640114-15,
+91135 2646100,
f.: +91135 2640117

---

www.wii.gov.in/national_mission_for_clean_ganga